International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232, Impact Factor: RJIF 5.22
www.hindijournal.com
Volume 2; Issue 3; May 2016; Page No. 19-20

समकालीन हिन्दी उपन्यासों में आर्थिक मूल्य बोध

एम॰ रघुनाथ
शोधार्थी काकतीया विश्वविद्यालय, वरंगल, तेलंगाना

प्रस्तावना

वैभव के परिचायक महानगरों में जहाँ एक ओर गगनचुम्बी अट्यनिकायों व हमारतों में रहने वाले उच्चवर्गीय लोगों की दुनिया बदली है वहीं दूसरी ओर इसी दुनिया के राजनीतिक लोग। उषा प्रिमंवदा का उपन्यास रूकेगी नहीं राधिका आधुनिक नारी तथा उसकी अपने अस्तित्व के प्रति बदलती धारणा का चित्रण किया है। उषा प्रिमंवदा ने राधिका को स्वतंत्रयेता नारी के रूप में चित्रित किया है। अपने अस्तित्व अपनी इच्छा–आकांक्षा के प्रति वह जागृत है इसलिए उस स्थान पर वह परिवार वालों से कहती हे– "जो आप चाहते हैं वही हमेशा क्यों हो ? क्या मेरी इच्छा कुछ भी नहीं है ? मैं आपकी बेटी हूँ, यह ठीक है पर अब मैं बड़ी हो चुकी हूँ और मै जो चाहूँगी वही करूंगी। (पृ. 51)

छित्रमस्ता उपन्यास में प्रिया की माँ की सास को बहू की दवा लेना डॉक्टरी इलाज करना अच्छा नहीं लगता वह कहती है– "सावर मामा तेरा तो रूपिया लुगाई के ऊपर खरच होवे जाय। मैं भी तो सात–सात पैदा किया इकई ज्यादा नरवरो है। तू जिम्मो सहारगे क्तिो ही या नरवरानली नार तने नचावगी।"[2] लगता है कि बहू बीमारी का नाटक ही करती है। प्रिया का सास तो बहू की बाजू से बोलती थी। वह बेटे से कहती है– "प्रिया को आफिस जाने दो नरेंद्र इसका भी मन लगा रहेगा।"[3]

मूल्यों के विघटन एवं बिखराव के कारण व्यक्ति भीतर–भीतर दूरता जा रहा है। वह परंपरा और परिवेश से दूरता जा रहा है। आर्थिक मूल्य आज बदल गये हैं। मानव को जीवनयापन के लिये मुख्य रूप से धन की आवश्यकता होती है। बगैर धन के वह अपनी आवश्यकताओं को पूरा नहीं कर सकता। परम्परगत भारतीय परिवार में महिला का अथौपार्जन करना परिवार की प्रतिष्ठा के प्रतिकूल समझा जाता था। लेकिन धीरे–धीरे समाज बदल गया और आज महिला का कामकाजी होना परिवार के लिये आवश्यक बन गया है। 'आपका बंटी' उपन्यास में मंन्नू भंडारी शकुन को पढ़ी लिखी और कॉलेज की प्रिंसिपल के रूप में चित्रित किया है। परन्तु अहम के कारण वह पति से तलाक लेती है। आज मूल्य विहाटित होते जा रहे हैं। आज विवाह नारी के जीवन भर का बंधन नहीं रहा। उसकी सफलता संदिग्ध होती जा रही है। आर्थिक रूप से यदि नारी संपन्न है तो भी पुरूष प्रधान इस समाज व्यवस्था में वह असहाय है, विवश है ऐसी स्थिति में न बदलने की विवशता के कारण घुटन और अवसाद में जीने के लिए अभिशप्त है।

'आपका बंटी' उपन्यास की शकुन नौकरीपेशा आधुनिक नारी है। वह नौकरी केवल मनबहलाव के लिये ही करती है। क्योंकि वह सात साल से लेकर पति से अलग रही है। वह सोचती है– "सामने खड़ी लम्बी छुट्टियाँ और गर्मी के बेहद लम्बे आलस और उदास दिन! कॉलेज क्या बन्द हो जाएँगे जैसे समय गुजारने का एक अच्छा खासा बहाना खत्म हो जाएगा।"[4]

जब वह डॉक्टर जोशी के साथ संबंध रखती है तो नौकरी के क्षेत्र में उसे चरित्रहीन नारी समझा जाता है। अतः स्पष्ट है कि नौकरीपेशा आधुनिक नारी समाज में अकेली नहीं रह सकती। समाज उसकी ओर पवित्रता से नहीं देखता यदि वह पति को तलाक देकर दूसरे आदमी के साथ रहती है तो, तो भी उसकी ओर घृणा की भावना से देखा जाता है फिर चाहे वह उसकी शादी भी क्यों न करें।

समकालीन लेखकों ने अपनी रचनाओं में सरकार और जनता के कानूनी सम्बन्धों को चित्रित किया है और आर्थिक मूल्य के बारे में लिखते हैं। अब्दुल विस्मिल्लाह ने झीन–झीने बीनी चादिरया में सरकार के प्रति बुनकर वर्ग के आक्रोश को चित्रित किया है। जनता सरकार के शासनकाल की वास्तविक घटना को आधार बनाकर प्रस्तुत उपन्यास की रचना की है। आज आर्थिक मूलहीनता की जड़ में भी राजनीतिक मूलहीनता निहित है। स्वतन्त्रता के बाद सरकार ने उनके सामाजिक आर्थिक पुनर्वास के लिये बहुतेरी योजनाएँ बनाई। सरकारी समितियों तथा अन्य संगठनों (बैंक आदि) के माध्यम से आर्थिक सहायता और ऋण आदि लेकर उनको ऊपर उठाने सूदखोरों–पूजीपतियों की गिरफ्त से मुक्त करने का सपना देखा गया। इस काम के लिये देश का अपार धन बरबाद किया गया। यह काम आज भी जारी है। किन्तु इस का लाभ किसको मिला ? देश की स्थिति गवाह है कि इसके फायदे, सरकारी ऋणों और धनों को सेठों सरमायादारों, दलालों और बिचोलियों के बीच में ही हड़प लिया।"[5] सरकार आर्थिक विषमता दूर करने के बजाय वर्ग–भेद निर्माण कर रही है।

आर्थिक दृष्टि से समाज में मुख्मतः दो वर्ग है। जिनके पास साधन सामग्री की अधिकता है वह पूँजीपति या उच्च वर्ग कहलाता है और जिनके पास सिवाय श्रम के कुछ नहीं है वह निम्न वर्ग कहलाता है।

मंजुल भगत का उपन्यास अनारो की नायिका अनारो निम्न वर्ग में भी आर्थिक संचेतना का निर्माण किस प्रकार से हुआ है उसके चरित्र के माध्यम से प्रकट करती है। अनारो आर्थिक दृष्टि से सजग नारी है। दिल्ली के उच्च या मध्यवर्गीय के बस्ती में झाड़ू–बर्तन का काम करके अपने बच्चों का म्युनिसिपालिटी के स्कूल में पढ़ाकर आम आदमी के बच्चों की तरह बाबूजी बनाना चाहती है। साथ में ही बेटी गंजी की शादी भी सारे रीति–रिवाजों के अनुसार करनी चाहती है। धन संचय का महत्व उसे मान्य होता है इसलिए अनारो को टीचर द्वारा आया प्रस्ताव मान्य करती है। टीचर कहती है, "देख भई कल शाम को जरा जल्दी आ जाना। कुछ खास नहीं बस यो ही दो चार जनों का खाना किया है। मसाला–वसाला पीस देना। घबरा मत फालतू काम करवाऊँगी तो तेरा बाकी भी नहीं रखूंगी। दो–चार रूपये तेरे हाथ पे रख ही दूँगी।"[6] इस तरह ज्यादा काम करके अनारो जैसी निम्न वर्ग की नारी पैसा–पैसा जोड़कर अपनी सांसारिक जिम्मेदारी पूरी करती है।

'बेतवा बहती' रही उपन्यास की नायिका उर्वशी ने जिस घर में जन्म किया था बड़ी विपन्नता थी वहाँ दरिद्रता का घोर साम्राज्य। उर्वशी के पिता के पास नाम मात्र की जमीन थी। उसके बल पर किसी बाल बच्चे वाले का भरण पोषण सम्भव नहीं था। उर्वशी के पिता दूसरों की रवेती जोत पर लेते थे वरिया पर उठाते। साल भर कड़ी मेहनत करते और बच्चों को खाना दे पाते थे। ज्यों–ज्यों

उर्वशी बड़ी होती गयी उसके अंग सौष्ठव से निखर संवरकर दिखने लगे।

मैत्रेयी पुष्पा ने उसकी सुन्दरता और निर्धनता का परिचय इस प्रकार कराया। "आंगन में खड़ी होती तो ऐसी लगती जैसे कच्चे मटमैंले धरौधे में वह अपूर्व सुन्दरी। वहाँ खाने को दो वक्त पूरा न जुटता था। ज्वार बेझेर की रोटी जब मिल जाये तो समझे छत्तीसो भोग।

आज के अर्भ–प्रधान युग में इसकी प्रधानता में अन्य मूल्यों को गौण कर दिया है। जीवन की भौतिक आवश्यकताएँ अर्थ से होती है। अर्थ जीविकोपार्जन का लक्ष्य है। सुन्दर सुशील बुद्धिमति उर्वशी का जीवन पूरी तरह त्रासदी से भरा है। पिता की मृत्यु के बाद उसके भाई अजीत उर्वशी का विवाह (मीरा) के पिता बरनोर से कराने की बात करते हैं तो वह अपनी सिर पीट लेती है और कहती है, "आज हमारे हाथ में कटार आ जाती तो हम अपनी छाती में भोंक लेते और सुख से जाते पर ऐसा धन्य भाग हमारा कहाँ। आहत होकर अपनी माँ से कहती है कि काहे को जनम दऔ अम्मा ... होने ही गरदन काहे नहीं दबोज दई हमारी।"[8] जब उर्वशी का विवाह मीरा के पिता से हो जाता है तो वह इतनी दुखी हो जाती है कि वह कहती है कि "उर्वशी तुम्हें विधता देखा था तो सहने की क्षमता थी पर आज ....आज।"[9] पढ़ी लिखी होने के कारण मीरा के चरित्र में आधुनिकता की झलक दिखाई देती है। भारतीय नारी होने के कारण उसमें भारतीय नारी के आचार–विचार हैं साथ ही पाश्चात्य शिक्षन से प्रभावित होने के कारण मार्क्सवाद का प्रभाव भी है। इसलिए वह नारी की परंपरागत दयनीय स्थिति एवं शोषण को समाप्त करना चाहती है।

समकालीन हिन्दी उपन्यासें में भारतीय समाज में स्थित आर्थिक मूल्य पर प्रकाश डाला है। आर्थिक विभिषिका के कारण मध्यवर्ग के लोग ही नेता एवं पूंजीपति अन्याय के विरूद्ध लोक जागृति का कार्य करते हैं। आर्थिक दृष्टि से भी मध्यवर्गीय वर्ग त्रस्त है। राजेन्द्र यादव का उपन्यास 'अनदेखे अनजान मुल' में अर्थभाव के कारण अर्थहीन जिन्दगी जीने को अभिशप्त पात्रों का वर्गन लेखक ने किया है। मध्यवर्गीय पात्रों में हीनता की ग्रन्थि भी पाई जाती है जिसके मूल में प्रमुख कारण निर्धनता है। निन्नी इसका सशक्त उदाहरण है।

संदर्भ सूची

1. रूकेगी नहीं राधिका – पृ. 51
2. प्रभा खेतान छिन्नमस्ता – पृ. 81
3. प्रथा खेलान छिन्नमस्ता – पृ. 149
4. आपका बंटी मन्नू भंडारी – पृ. 31
5. झीन–झीने बीनी चदरिया – अब्दुल विस्मिल्लह पृ.
6. मंजुल भगत अनारो पृ. 33
7. बेतवा बहती रही मैत्रेयी पुष्पा – पृ. 14
8. वही पृ. 118
9. बेतवा बहती रही मैत्रेयी पुष्पा – पृ. 132